आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान
सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077

राजभाषा ई-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक (जुलाई-दिसम्बर 2022)

अंक-3, वर्ष-2022

राजभाषा ई-पत्रिका

अंक-3, वर्ष - 2022

संरक्षक
डॉ. मंजु राही
निदेशक प्रभारी

संपादक
डॉ. वंदना शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल
प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती मीनाक्षी भसीन
श्री रघुबर दत्त

विषय सूची **पृष्ठ सं.**

1. संरक्षक की कलम से 2
2. पुरस्कृत निबंध 3
3. कर्मचारियों का पन्ना
   - *दौड़ और सत्य* 7
   - *संस्थान के वैज्ञानिक से बातचीत* 8
4. संस्थान की गतिविधियां
   - *हिन्दी दिवस माह* 12
   - *संस्थान का वार्षिकोत्सव* 18
   - *स्वच्छता संबंधी गतिविधियां* 21
   - *सतर्कता जागरुकता सप्ताह* 22
   - *संविधान दिवस* 23
5. छ:माही में सेवा-निवृत्ति एवं नई नियुक्तियां 24

राजभाषा ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों से पत्रिका के उल्लेखित सदस्यों की सहमति/असहमति होना अनिवार्य नहीं हैं, इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

संरक्षक की कलम से :-

मुझे बेहद खुशी है कि हम एनआईएमआर की राजभाषा ई-पत्रिका का तृतीय ई-अंक जुलाई-दिसम्बर 2022 आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। राजभाषा ई-पत्रिका का प्रकाशन संस्थान में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ाने में सहायक होने के साथ ही पर्यावरण हितैषी की दिशा में भी एक पहल कहा जा सकता है। हालांकि ई-पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य तो भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम का अनुपालन ही है, किन्तु इसके साथ ही पत्रिका का ई प्रकाशन सरकार के डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ते कदमों में भी सहायक कहा जा सकता है, यानि एक पंथ दो काज। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को निभाने में अग्रणी होंगे। सहज, सरल एवं बोलचाल की भाषा के प्रयोग की छूट हमें दी गई है। उसी के तहत हम अपने लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अवश्य कामयाब होंगे।

पत्रिका के इस अंक में हमने हिन्दी दिवस माह के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कृत निबंधों को स्थान दिया है, जैसा कि राजभाषा ई-पत्रिका की विषय-सूची के अंतर्गत "कर्मचारियों का पन्ना" शीर्षक में कर्मचारियों की रचनाओं के साथ-साथ संस्थान के किसी वैज्ञानिक से बातचीत को शामिल किया जाता है। इसी श्रृंखला में हमने "दौड और सत्य" नामक कविताओं को स्थान देते हुए संस्थान के डॉ. रजनीकान्त दिक्षित, वैज्ञानिक-ई का साक्षात्कार भी प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही "संस्थान की गतिविधियां" शीर्षक के अंतर्गत इस छ:माही के दौरान होने वाली संस्थान की समग्र गतिविधियों को शामिल करने का प्रयास किया गया है जिसके अंतर्गत हिन्दी दिवस माह, संस्थान का वार्षिकोत्सव, स्वच्छता संबंधी गतिविधियां, सतर्कता जागरुकता सप्ताह, संविधान दिवस संबंधी गतिविधियों को स्थान दिया गया है। ई-पत्रिका के अंत में इस छ:माही में संस्थान से सेवा-निवृत्त एवं नव-नियुक्त कर्मियों को शुभकामनाएं देते हुए उनकी जानकारी प्रस्तुत की गई है।

आशा है कि राजभाषा ई-पत्रिका के इस अंक में दी गई जानकारियां सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। इस संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव सादर आमंत्रित हैं। आपके द्वारा भेजे गए विचारों एवं सुझावों के लिए हम सदा आपके आभारी रहेंगे। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं हमारे लिए प्रेरणा का कार्य करेंगी और आपके व हमारे बीच विचार-संप्रेषण का माध्यम बनेंगी।

मंजु राही

डॉ. मंजु राही

हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे : भूत से वर्तमान तक की यात्रा

(श्री दिनेश सोनी, प्रशासन अधिकारी)

भूत से वर्तमान तक की हमारी यात्रा बहुत से पड़ावों से होकर गुजरी है। यदि हम बात करें कौन थे, की तो यहां यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि हमारा देश "भारत" भूतकाल में बहुत समृद्ध था। इतिहास के पन्नों से यदि मध्यकाल तक की यात्रा की बात करें तो यहां यह कहना उचित ही होगा कि प्राचीन काल से मध्यकाल तक हमारे देश में सब कुछ एक नियोजित तरीके से ही गतिमान होता था। हालांकि उस समय तक देश विभिन्न रियायतों एवं हिस्सों में बंटा था, बहुत अधिक भिन्नता थी, परन्तु फिर भी हर क्षेत्र में बहुत ही उन्नति हुई। समाज, व्यापार, शिक्षा इत्यादि अपने उच्चतम स्तर पर थे। हमारा देश "सोने की चिडिया" कहा जाता था। हर तरफ खुशहाली थी। चन्द्रगुप्ता मौर्य के काल में आए विदेशी यात्री फाह्यान ने भी कहा है कि "मौर्यकाल भारत का स्वर्ण काल है और भारत की जनता में चरित्र एवं प्रतिभा विद्यमान है"। यह काल व्यापार तकनीकी एवं आर्थिक रुप से भी बहुत उन्नत था। कुल मिलाकर आधुनिक काल तक हमारा देश हर तरह से सबसे आगे था और यहां के लोगों में मानव जाति के प्रति सम्मान एवं प्रेम था, लेकिन इस काल तक "देशप्रेम" की भावना का उद्भव नहीं हुआ था। क्योंकि देश विभिन्न हिस्सों में ही विभाजित था तथा हर प्रांत या रियासत का उद्देश्य केवल अपने क्षेत्र का विकास करना था निष्कर्षत: भारत सम्पन्न होते हुए भी "एकता के अभाव" के कारण विश्व स्तर पर काफी पीछे था।

अंगेजों के आगमन के साथ ही भारत में आधुनिक काल की शुरुआत हुई। चूंकि देश अनेक भागों में विभाजित था। अत: अंग्रेजों ने इसका फायदा उठाया एवं व्यापार तथा संरक्षण के नाम पर विभिन्न प्रांतों पर अपना एकाधिकार स्थापित कर, संपूर्ण भारत पर अपना कब्जा जमा लिया। हांलाकि इस दौर में भारत को राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक नुकसान हुआ परंतु जो सबसे महत्वपूर्ण था वह यह की भारत की जनता में "देशप्रेम" एवं "एकता की भावना" का उदय हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर देश को आजाद कराने के लिए विभिन्न राजनैतिक दलों का गठन हुआ और देश को एकता की ओर जाने का सूत्रपात हुआ। विभिन्न राष्ट्रवादी नेताओं ने अपने दम पर भारत की जनता को एक सूत्र में पिरोया और भारत नाम की एक इकाई का गठन हुआ। सर्वाधिक लाभप्रद यह रहा कि भारत को विभिन्न टुकड़ों में विभाजित "संविधान" प्राप्त हुआ, जिसे डॉ. बी.आर. अंबेडकर जैसे शिक्षाविदों, समाजसेवियों एवं बुद्धिजीवियों ने एकत्र कर "भारत के संविधान" का निर्माण किया। भारत के संविधान के निर्माण के साथ ही भारत में फैली विभिन्नता एक हो गई और धीरे-धीरे एक स्वतंत्र भारत का निर्माण हुआ। स्वतंत्रता के दौर में बहुत तेजी से राष्ट्रप्रेम का उदय हुआ और भारत की जनता एक हो गई। स्वतंत्रता पश्चात् भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति की, शिक्षा का विकास हुआ, आर्थिक दृष्टि से भारत समृद्ध हुआ।

हालांकि इस युग में आते ही हमें एकता का पुरस्कार तो मिला परंतु धीरे-धीरे भाईचारे, प्रेम, सम्मान, चरित्र, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, कर्तव्य-परायणता इत्यादि से हम दूर होते चले गए। जहां पहले हर मनुष्य, दूसरे व्यक्ति का साथ देता था और केवल "वचन" पर ही देश चलता था इसके स्थान पर आज व्यभिचार, भ्रष्टाचार, विश्वासघात ने लिया है। सबसे बड़ा नुकसान यह कि परिवारवाद का पतन हुआ। आज के युग में किसी भी व्यक्ति को अपने परिवार को देने के लिए समय नहीं, माता-पिता की सेवा करने का, बच्चे सोचते भी नहीं। भाई-भाई के खून का प्यासा है। नौकरी, व्यापार एवं शिक्षा में इतनी प्रतिस्पर्धा हो गई है कि लोग अपनों को ही भूल जाते हैं। आज मनुष्य केवल एक "आर्थिक स्रोत" की तरह ही पूजा जाता है। जब तक किसी से कोई लाभ है तभी तक उसकी जरुरत है। प्रतिस्पर्धा से छल-कपट, धोखेबाजी को बढ़ावा मिला, जिससे हर वस्तु में अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए मिलावट का आगमन हुआ।

एक तरफ तो विज्ञान और तकनीकी के विकास के कारण मनुष्य की जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई, परंतु दूसरी तरफ गलत खान-पान, प्रदूषण, अधिक जनसंख्या इत्यादि के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ा और विभिन्न प्रकार की बीमारियों का आगमन हुआ। जहां पहले ऋषि मुनि, वैद्य इत्यादि नब्ज देखकर ही इलाज कर देते थे, आज आधुनिक चिकित्सा पद्धति एवं उपकरणों से भी बीमारी पकड़ में नहीं आती। पहले मनुष्य मानसिक रुप से भी बहुत उन्नत एवं मजबूत था, परंतु आज के युग में मानसिक तनाव बहुत अधिक बढ़ गया है। निष्कर्षत: हम अंग्रेजों से एवं उनकी गुलामी से तो स्वतंत्र हो गए परंतु अपने स्वार्थ, लाभ, लालच, वासना, बीमारी, मानसिक तनाव इत्यादि से स्वतंत्र नहीं हुए और इनके गुलाम बन गए।

आज विश्व स्तर पर मनुष्य का विकास ब्रह्मांड के विकास की तरह तेजी से हो रहा है, तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है, जिसके हम आदी हो चुके हैं और भविष्य में हम केवल तकनीकी के सहारे ही अपना जीवन यापन कर रहे होंगे। भविष्य में अकेला रहने के लिए किसी एकांत स्थान की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि मनुष्य के पास अपने आपको अकेला रखने के लिए एवं मनोरंजन के लिए अनेक साधन होंगे। आज हमारे पास अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं शिष्टाचार के कुछ अंश शेष हैं, परन्तु भविष्य में यह सब समाप्त हो जाएगा। भविष्य में हम अपने त्यौहार, रीतिरिवाज और संस्कृति से बहुत दूर हो जाएंगे। स्त्री-पुरुष का भेद भूल जाएंगे और परिवार एवं समाज क्या होता है यह शायद ही किसी को याद रहे। हमारे लालच में और वृद्धि होगी और हम अपने आप को बचाने के लिए केवल धन के पीछे भागेंगे। भविष्य में तो इंसानियत, मनुष्य प्रेम इत्यादि सब समाप्त ही होने वाले है। सीमित संसाधन और बढ़ती जनसंख्या एवं महंगाई के कारण छल-कपट, चोरी, घोटालों, भ्रष्टाचार इत्यादि में अत्यधिक वृद्धि होगी और मनुष्य अपनी बची-खुची मर्यादा को लांघ जाएगा जो आंखों की शेष शर्म बची है वह भी धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी।

कहते है कि हर सिक्के के दो पहलू यानि लाभ और हानि होते है। भूत से वर्तमान तक (हम कौन थे, क्या हो गए) और वर्तमान से भविष्य तक (क्या होंगे) तक हमने बहुत लाभ कमाया है, परंतु साथ ही बहुत हानियां भी उठाई हैं। हर तस्वीर के दो रुप होते हैं, परंतु क्या होंगे, विषय पर लिख पाना बहुत ही कठिन है। क्योंकि यह कल्पना से भी परे हैं। दिमाग का 5 प्रतिशत से कम प्रयोग होने और संपूर्ण जगत का 0.5 प्रतिशत से कम जानकारी रखकर भी आज हालत यह है कि हम कुछ संभाल नहीं सकते। यह प्रतिशत जब बढ़ेगा तो क्या होगा, यह कह पाना कठिन ही नहीं असंभव भी है।

हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे : "भूत से वर्तमान तक की यात्रा"

(श्रीमती कमला नेगी, तकनीकी अधिकारी-बी)

"हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे" यह पंक्तियां सुप्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त की कालजायी कृति भारत-भारती की है और 1912 में इसकी रचना की गई थी, जबकि भारत एक पराधीन देश था। उस समय देश में जन-मानस में जागृति जगाने के लिए राष्ट्र कवि ने इसकी रचना की। आज के परिवेश में भी यह काव्य-खण्ड अर्थात 100 वर्ष पश्चात् भी आज की परिस्थितियों पर लागू होता है।

हम कौन थे, हमारा प्राचीन इतिहास गौरवशाली था, इतिहास ज्ञान, अर्थशास्त्र, धार्मिक ज्ञान, सभ्यता, संस्कृति अपनी चरम सीमा पर थे। जैसे-रामायण, गीता, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, तक्षशिला, नांलदा जैसे विश्व विद्यालय, जहां समूचे विश्व से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आते थे। चाणक्य जैसे गुरु जिन्होंने बिखरे हुए जनपदों को अपने अथक प्रयासों से एक विशाल समाज्य की स्थापना की। देश को नन्द जैसे अयोग्य और अत्याचारी शासक से मुक्त कराया और एक महान साम्राज्य (मौर्य) की स्थापना की। देश के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे शासक को शिक्षित किया और एक लम्बे समयावधि तक स्थिरता का वातावरण तैयार किया और स्वयं वानप्रस्थ को चले गए। हमारे देश में यशोधरा, सीता, मैत्रेयी जैसी महान स्त्रियां हुई है। हम ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता इतिहास के क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर थे, आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ एवं खगोलविद हुए।

रामायण, गीता जैसे ग्रंथ जो जीवन जीने का उपदेश देते हैं, परंतु समय के साथ-साथ आधुनिकता को अपनाकर हमने अपना अतीत भुला दिया है। हमने अपनी संस्कृति, सभ्यता का अनुकरण छोड़ दिया है। प्राचीन संस्कृत भाषा जो वेदों, उपनिषदों की भाषा को छोड़ दिया, यहां तक की मातृभाषा को भी अनदेखा कर दिया है। हमने प्रौद्योगिकी सूचना को अत्यधिक महत्व दिया और अपनी प्राचीन परंपरा और रहन-सहन के तौर तरीकों को भुलाते चले गए। उसका कुछ कारण भारत में विदेशी आक्रांताओं का आक्रमण और हमारे सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट करना, पुराने पुस्तकालयों को जलाना आदि भी है। नांलदा इसका ज्वलंत उदाहरण है। विदेशी शासकों द्वारा यहां की प्राकृतिक वस्तुओं का दोहन हुआ, व्यापार को क्षति पहुंचाना और देश की सम्पत्ति को यहां से अपने देशों में ले जाना रहा है। परिणाम स्वरुप यहां के उद्योग धन्धों पर बुरा असर हुआ, लोगों का रोजगार समाप्त हो गया।

आज वर्तमान में हमारी स्थिति और भी निराशाजनक हो गई है। हमने स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली, परन्तु उसका मूल्य नहीं समझ पाए। आज चारों ओर राजनेता अपने निजी स्वार्थ को अधिक महत्व देते हैं, देश का धर्म के नाम पर, क्षेत्रीयता के नाम पर, संस्कृति और जातिवाद के नाम पर जनता में विघटन पैदा करते हैं। आज के चाणक्य कुटिया को छोड़कर महलों में रहते हैं। परिणाम स्वरुप शिक्षा का स्तर गिर गया है और एक आम विद्यार्थी की

पहुंच से बाहर है। प्राचीन भारत में गुरुकुल होते थे और शिक्षा का कोई शुल्क नहीं होता था, नि:शुल्क होती थी, परन्तु आज शिक्षा का शुल्क बहुत ज्यादा हो गया है।

देश में अमीर-गरीब के बीच की खाई बहुत विशाल हो गई है। अमीर और अमीर होते जा रहे हैं और गरीब और ज्यादा गरीब हो रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की कमी हैं, आवास की समस्याएं हैं। अपने निजी स्वार्थों की वजह से हमने देश का विभाजन मौन रहकर स्वीकार कर लिया है। यदि जनता में देश के प्रति जागरुकता, देश प्रेम नहीं होगा तो सीमावर्ती देश घात लगाए रहते हैं और देश का अस्तित्व खतरे में रहता है। कई देश धर्म के नाम पर लड़ते हैं, कई अपनी शक्ति प्रदर्शन कर दूसरे देशों को हड़पने की कोशिश करते हैं। राजनेता भी जनता में चेतना जागने का प्रयास नहीं करते, वरन् उन्हें विभाजित कर अपनी वोटों की राजनीति करते हैं।

वर्तमान में स्थिति बहुत ही सोचनीय है और यदि हमने अपने वर्तमान को नहीं सुधारा तो भविष्य भी अन्धकारमय होगा। अत: आवश्यकता है कि हमें हर स्तर पर जन-चेतना जाग्रत करनी होगी। राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक स्तर, देश प्रेम को सशक्त बनाना होगा। उसके लिए हमें आपसी मतभेद भुलाकर जैसे-जातिवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक मतभेद, सांस्कृतिक मतभेद, अमीर-गरीब वर्ग को एकजुट होना होगा तभी हमारे समाज और देश का उत्थान होगा। अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाषा, रहन-सहन को महत्व देना होगा और अपनी भावी पीढ़ियों को भी इसमें रुचि लेने के लिए प्रेरित करना होगा। तभी हमारा भविष्य सुनहरा और सुखमय होगा। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और स्वास्थ्य की समस्याएं बहुत गंभीर रुप ले चुकी हैं। इस ओर सरकार और जनता को मिलकर कार्य करना होगा। देश की सुरक्षा की ओर अत्यंत आवश्यक रुप से ध्यान देने की आवश्यकता है और देश सेवा में लीन वीरों को उनके परिवारों को आदर सम्मान संवेदना की दृष्टि से देखना चाहिए। उनके परिवारों और वीरों को अधिक सुविधाएं देनी चाहिए। देश के जवान हमारे लिए आदरणीय हैं।

अंत में यही कहुंगी कि आज देश को सत्ता के लालची लोगों की आवश्यकता नहीं, बल्कि चाणक्य जैसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो कि चन्द्रगुप्त जैसे सम्राटों का निर्माण कर सकें और हम अपने देश का भविष्य उज्जवल बना सकें। शिक्षा सभी के लिए आवश्यक हो और नि:शुल्क हो, एक शिक्षित समाज ही सभ्य समाज की नींव है और सभ्य समाज होगा तो उन्नति, प्रगति स्वयं स्थापित हो जाएगी।

कर्मचारियों का पन्ना

"दौड़"

जिन्दगी की दौड़ में, वक्त के थपेड़ों से।
कितना कुछ बदल गया, पता ही नहीं चला ।।

वो बचपन की शरारतें, खिलखिला कर हँसना।
कब जिन्दगी से निकल गए, पता ही नहीं चला ।।

वो साईकिल की रेस, खुले आसमान में ऊपर तक।
पतंग उड़ाना भूल गए, पता ही नहीं चला।।

वो गिल्ली डंडे का खेल, वो छुपम-छुपाई, बच्चों की रेल।
कब के पीछे छूट गए, पता ही नहीं चला।।

बच्चों की जरुरतें, पूरी करते करते।
ऑखें कब धुंधला गई, पता ही नहीं चला।।

जिन्दगी की दौड़ में, कब सुबह हुई।
कब शाम ढल गयी, पता ही नहीं चला।।

"सत्य"

श्रेष्ठ होने का अहंकार, या जीवन का घना अंधकार,
मनुष्य का सत्य से परिचय का इंतजार।।

अपनी ही बनाई दुनिया उजाड़ते, करते लोगों का नरसंहार,
क्यूं भूल जाते हैं जीवन के संस्कार।।

वो मृत्यु ही तो है जो, जीवन का सबसे बड़ा सत्य,
इस सत्य को मानने से, करें हम कैसे इनकार,
करें हम कैसे इनकार।।

"महेश जायसवाल" क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु

संस्थान के डॉ. रजनीकान्त दिक्षित, वैज्ञानिक-ई से बातचीत

राजभाषा ई-पत्रिका में वैज्ञानिकों के साक्षात्कार की आरंभ की जा रही श्रृंखला के अंतर्गत इस अंक में संस्थान के वैज्ञानिक-ई, डॉ. रजनीकान्त दिक्षित के साथ डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा लिए गए साक्षात्कार को शामिल किया जा रहा है, जो निश्चय ही वैचारिक दृष्टि से संस्थान के वैज्ञानिकों को राजभाषा हिन्दी में अनुसंधान पेपर के प्रस्तुतीकरण हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करेगा। यहां यह कहना आवश्यक होगा कि डॉ. दिक्षित अपना अधिकांश कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करते हैं, जो राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कदम है। इसके साथ ही वह अपने विज्ञानीय पेपर भी हिन्दी में प्रस्तुत करते हैं। अत: डॉ. दिक्षित से लिए गए साक्षात्कार के कुछ अंश यहां दिए जा रहे हैं।

प्रश्न-1. आपके जीवनवृत्त एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के मद्देनजर कृपया अपना परिचय दें।

उत्तर : मेरा जन्म हरियाणा के रेवाडी जिले के डूगंरवास ग्राम में दिनांक 01.05.1976 को हुआ। ग्राम-निखरी के सरकारी स्कूल से 10वीं की परीक्षा और 12वीं की परीक्षा मेडिकल विषय से रेवाडी सरकारी विद्यालय से प्राप्त की। इसके पश्चात् कृष्णलाल पब्लिक कॉलेज, रेवाडी से स्नातक (बीएससी) की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से बॉयोटेक्नॉलाजी विषय में स्नातकोत्तर एवं पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। मैंने स्कूली शिक्षा हिन्दी माध्यम से प्राप्त की। पीएचडी के दौरान आने वाली विषम परिस्थितियों में मेरे लिए श्रीमद् भागवत गीता का अध्ययन हमेशा प्रेरणदायक रहा है। गीता अध्ययन के साथ-साथ विज्ञानीय प्रयोगों को करते हुए इनके पारस्परिक संबंध समझने में भी गहन रुचि जागरुक हुई। वर्ष 2003-04 के दौरान एक वर्ष तक प्राध्यापक के रुप में प्राइवेट कॉलेज में बीटेक के छात्रों को शिक्षित किया और एक प्रयोगशाला स्थापित की। वर्ष 2004 से 2007 तक तीन वर्ष के लिए पुणे में राष्ट्रीय जैव कोशिकीय विज्ञान (एनसीसीएस) के अधीन कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् 2007 से 2010 तक एक अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान, राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एनआईएच), अमेरिका में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और 2010 से 2017 तक रामालिंगास्वामी फैलोशिप, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद में आत्म-निर्भरता के साथ कार्यभार संभाला। वर्ष 2017 से अभी तक आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में वैज्ञानिक-डी एवं वर्तमान में वैज्ञानिक-ई के पद पर कार्य कर रहा हूं।

प्रश्न-2. वर्तमान भौतिकवादी युग में विज्ञान एवं तकनीक के विकास के साथ युवा पीढ़ी को आध्यात्म से जोड़ना जीवन में एक संतुलन स्थापित करने में कहां तक सहायक सिद्ध हो सकता है?

उत्तर : मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि युवा पीढ़ी के लिए विज्ञान के साथ आध्यात्म को जोड़ना सहायक ही नहीं वरन् उन्हें सफल, संतुष्ट जीवन प्रदान करने के साथ सकारात्मक सोच का जरिया बनेगा। विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करते हुए गीता अध्ययन ने मेरी जीवन शैली और कार्य शैली को उत्कृष्ट बनाने में अहम भूमिका निभाई और मेरे जीवन को नई दिशा दी। यही कारण है कि गीता अध्ययन विज्ञानीय क्षेत्र यानि प्रयोगों एवं अनुसंधान में एक स्वस्थ दृष्टिकोण प्रदान करने में उपयोगी रहा है। आज के दौर में भौतिक सुविधाओं के वशीभूत होकर हम आत्मिक सुख से दूर होते जा रहे हैं। यही कारण है कि आज के परिपेक्ष में स्वामी विवेकानन्द का कथन सत्य प्रतीत होता है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में यदि विज्ञानीय अनुसंधान आर्थिक और आत्मिक सुख में संतुलन स्थापित करने के लिए किए जाएं तो मानव जाति का बहुत उपकार होगा और तभी भारत का विश्वगुरु बनने का सपना साकार होगा। मेरा एक मुख्य प्रयास यह भी है कि आत्मिक शान्ति के लिए गीता में लिखे हुए मंत्र और उनके पीछे गुप्त रुप से छिपे हुए ज्ञान को विज्ञानीय तथ्यों की प्रमाणिकता के साथ सिद्ध करते हुए आने वाली पीढ़ी के सम्मुख प्रस्तुत करुं।

प्रश्न-3. ऐसा ज्ञात हुआ है कि आपको एक अनूठे एवं नवीन अनुसंधान का श्रेय प्राप्त है, जिसका मुख्य ध्येय मच्छरों में जीवनशैली से जुड़े हुए शारीरिक रोग-प्रतिरोधक क्षमता एवं व्यावहारिक क्रिया के पारस्परिक रिश्तों में आनुवांशिक तत्वों की खोज है। कृपया इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर : जी हां, आप ठीक कह रही हैं। इसे एक अनुसंधान लेख के माध्यम से भी प्रमाणित किया है कि मच्छर प्रजातियां विकासात्मक दृष्टि से विविध पारिस्थितिकी में अनुकूलन एवं जीवित रहने में अत्यंत सफल प्रजाति है। मच्छर-परजीवी की परस्पर प्रतिक्रियाओं एवं मलेरिया रोग संचारण के मध्य आनुवंशिक संबंधों का भी खुलासा किया गया है। यही नहीं, मेरे नेतृत्व में संस्थान के शोधकर्ताओं ने अपने निष्कर्षों के माध्यम से बताया है कि हॉरिजन्टल जीन ट्रांसफर या एचजीटी जटिल जीवों में घटित होता है। एचजीटी एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा एकल कोशिका बैक्टीरिया एक दूसरे को बहुत उपयोगी जीन्स देते हैं। लेकिन पहली बार हमारी युवा वैज्ञानिकों/शोधकर्ता टीम ने पाया है कि मादा एनॉफिलीज़ क्युलिसिफेसिज़ मच्छर अनेक पौधों वाली प्रोटीन्स निर्मित करता है जो कई प्रकार से प्रभावी लाभ प्रदान करता है, जैसे जिस रस पर यह पोषित होता है उसका उपाचय करके प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित रह पाता है। दूसरी ओर प्रयोगशाला में मच्छरों की रोग प्रतिरोधक क्षमता का गहन अध्ययन तथा परजीवी रोग के कारण व्यावहारिक क्रिया पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन कार्य भी प्रगति पर है। इस विशेष महत्व वाले अनुसंधान में बहुत से रहस्यों का पटाक्षेप किया गया है : (क) प्लाज्मोडियम वॉयवैक्स के रुपांतरण के दौरान विभिन्न ऊत्तकों जैसे आंत, मच्छर का रक्त (हेमोलिम्फ) एवं स्त्रावग्रंथी में होने वाले आनुवांशिक तत्वों का पता लगाना (ख) साथ ही नर व मादा मच्छरों में प्रजनन प्रक्रिया से जुड़े हुए ऊत्तकों के बदलाव पर भी विशेष अनुसंधान के तहत मुख्य आनुवांशिक तत्वों के बारे में पता लगाया है। मुख्य रुप से बहुआयामी तकनीक का प्रयोग करते हुए पहली बार मेरे नेतृत्व में मच्छरों की जीवन शैली से जुड़ी हुए रहस्यमयी व्यावहारिक क्रियाओं में होने वाले बहुउपयोगी आनुवांशिक तत्वों की खोज मच्छर जनित रोगों से निजात पाने के वैकल्पिक तरीकों के रुप में कारगर सिद्ध होगी।

प्रश्न-4. क्या आप राजभाषा नियम अधिनियम से परिचित है ?

उत्तर : जी हॉ, संस्थान में प्रति तिमाही होने वाली कार्यशालाओं के माध्यम से हमें राजभाषा नियम, अधिनियम संबंधी जानकारी मिलती रहती है। साथ ही संस्थान के प्रत्येक अनुभाग में लगे "राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण निर्देश" के बोर्ड से भी राजभाषा नियम, अधिनियम की जानकारी मिलती है।

प्रश्न-5. क्या आज के विज्ञान एवं तकनीकी युग में आप राजभाषा हिन्दी में कार्य करना आसान समझते है?

उत्तर : युग चाहे विज्ञान का हो या तकनीक का, भाषा तो एक माध्यम है अभिव्यक्ति का। यदि अभिव्यक्ति का यही माध्यम यानि भाषा, स्वभाषा हो तो निश्चित रुप से इससे सम्प्रेषण में, विचारों के आदान प्रदान में और जन-सामान्य तक इसे पहुंचाने में हमेशा हर युग में आसानी ही होगी। राजभाषा हिन्दी में अपने अनुसंधान पेपर प्रस्तुत करने में हमेशा गर्व का ही अनुभव होता है और साथ ही युवा वैज्ञानिकों, छात्रों को सहज-सरल तरीके से अपनी भाषा, राजभाषा से जोड़कर समझाना निश्चित रुप से अपनी अस्मिता एवं देश सेवा का कार्य है।

प्रश्न-6. क्या कम्प्युटर पर हिन्दी में कार्य करना आसान है?

उत्तर : जब हम आज के युग को विज्ञान एवं तकनीकी का युग कहते हैं तो इस बात का प्रश्न ही नहीं उठता कि कम्प्युटर में हिन्दी में कार्य करना आसान है या नहीं। बल्कि तकनीक ने तो इतनी प्रगति की है कि कम्प्युटर में हिन्दी टाइपिंग के एक नहीं, लगभग 11 तरीके विद्यमान हैं। मुझे जहां तक जानकारी है, 2-3 तरीकों के द्वारा हमारे संस्थान के कई कर्मचारी हिन्दी टाइपिंग कर रहे हैं। यानि एक तो इंस्क्रिप्ट, दूसरा माइक्रोसॉफ्ट इंडिक और वॉइस टाइपिंग। कहने का मतलब है कि इंग्लिश टाइप द्वारा, बोलकर डिक्टेशन द्वारा, माउस द्वारा, कलम से लिखकर टाइप करना आदि कई तरीके वर्तमान ने हमें उपलब्ध कराए हैं। आवश्यकता है तो मात्र उन तरीकों का अपनी सुविधानुसार उपयोग करने की। यहां बताना चाहूंगा कि राजभाषा विभाग की वैबसाइट पर उपलब्ध शब्दावली यानि ई-महाशब्द कोश बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ है। क्योंकि कई बार कुछ अंग्रेजी शब्दों के सटीक हिन्दी अर्थ पता नहीं होते तब उसका उपयोग किया जाता है।

प्रश्न-7. क्या आप अपने विज्ञानीय पेपर/पत्र हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करते हैं? यदि हॉ तो आपके प्रति साथी वैज्ञानिकों एवं पर्यवेक्षकों के दृष्टिकोण के बारे में अवगत कराएं।

उत्तर : मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपने यह महत्वपूर्ण प्रश्न किया। मुझे जब भी मौका मिलता है मैं अपने लगभग सभी विज्ञानीय पेपर हिन्दी में ही प्रस्तुत करता हूं और इसमें मुझे अपने साथी वैज्ञानिकों की मिली जुली प्रतिक्रिया मिलती है। बहुत से वैज्ञानिकों मुख्यत: युवा/शोधकर्ताओं की प्रशंसा भरी दृष्टि होती है कि वैज्ञानिक होने के नाते अंग्रेजी में पेपर प्रस्तुत करने की योग्यता होने के बावजूद हिन्दी में प्रस्तुत किया है। हालांकि कभी-कभी कुछ लोगों का विरोधाभास भी होता है कि विज्ञानीय पेपर का प्रस्तुतीकरण तो अंग्रेजी में ही किया जाना चाहिए। यह उनकी समझ का फर्क है। इसे भाषा से ना ही जोड़ा जाए तो उचित होगा।

प्रश्न-8. क्या आपको लगता है कि हिन्दी में विज्ञानीय पेपर प्रस्तुत करने में चुनौतियां है? यदि हॉ तो कृपया बताएं।

उत्तर : नहीं, चुनौतियां तो नहीं हैं किन्तु जैसा कि मैंने पहले कहा कि बारम्बार गीता अध्ययन करते करते मुझे स्वत: यह ऊर्जा प्राप्त हुई और मैं विदेशी भाषा की गुलाम मानसिकता से बाहर आ गया। दूसरा हिन्दी में कार्य करने के तकनीक ने भी साधन उपलब्ध कराए हैं। अपनी स्वस्थ मानसिकता और अस्मिता के प्रति सजग रहकर हम आत्म सम्मान एवं गर्व के साथ यदि वर्तमान आधुनिक तकनीक का उपयोग करें तो हिन्दी में कार्य करने में कोई चुनौती नजर नहीं आती।

प्रश्न-9. क्या आप अपने अधीनस्थों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं? यदि हॉ तो किस प्रकार?

उत्तर : जी हॉ। संस्थान में राजभाषा नियम, अधिनियम के तहत हमारे लिए हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की जाती है जिसके माध्यम से हमें यह जानकारी दी जाती है कि हमें अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में करना है। इसी जानकारी को हम अपने अधीनस्थों में भी परिचालित करते हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि इन कार्यशालाओं में तकनीकी वर्ग को भी शामिल किया जाता है किन्तु मैं अपने अधीनस्थों को लिखित कार्य, जहां तक संभव हो हिन्दी में करने का निर्देश देता हूं और वे हिन्दी में कार्य भी करते हैं। क्योकि मैं स्वयं हिन्दी में पेपर प्रस्तुतीकरण एवं कुछ हद तक लिखित कार्य के द्वारा अपना उदाहरण प्रस्तुत करता हूं और वे मेरा अनुसरण भी करते हैं।

प्रश्न-10. अंत में संस्थान के कर्मचारियों के लिए आपका कोई प्रेरणात्मक संदेश जिससे वे राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित हो।

उत्तर : इस संबंध में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि अपना देश, अपना संस्थान के साथ अपनी भाषा में कार्य होता है तो हम प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भी कहा है कि निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। देखा जाए तो हमें जब अपनी भाषा के उपयोग के निर्देश दिए गए हैं तो हमें भारत सरकार के अन्य नियमों के अनुपालन के साथ राजभाषा नियमों का भी अनुपालन सख्ती से करना चाहिए। राजभाषा हिन्दी का अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिन्दी को उसका उचित दर्जा दिलाना होगा। सरकारी सेवा में रहते हुए हमें अपने आपको राजभाषा हिन्दी की सेवा से वंचित नहीं करना है बल्कि एक सच्चे, ईमानदार, कर्मठ कर्मी की भूमिका निभाते हुए अपने इस दायित्व का निर्वाह भी उतनी ही निष्ठा से करना है जितनी निष्ठा से अन्य कार्य करते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे संस्थान में भी हम राजभाषा के अधिकाधिक उपयोग द्वारा लक्ष्य प्राप्ति की ओर तेजी से कदम बढ़ाएंगे।

अंत में, मैं अपने अनुभव और आत्मविश्वास से कह सकता हूं कि रोजमर्रा के जीवन में होने वाली घटनाओं, मानवीय मूल्यों और अनुसंधान को समझना और जन-सामान्य को समझाना हो तो राजभाषा हिन्दी एक सशक्त माध्यम है और साथ में वर्षों से गीता ज्ञान के साथ अनुसंधान कार्यों के अनुभव से यह भी जाना कि गीता केवल धर्म ग्रंथ ही नहीं बल्कि एक बहुत ही गहरे ज्ञान-विज्ञान के रहस्यों से ओत-प्रोत है। आने वाली पीढ़ी अगर अपने अनुसंधानों से श्रीमद्भागवत गीता के विज्ञानीय पहलुओं को तर्क संगत रुप से प्रमाणित करेगी तो समाज को नई दिशा दी जा सकती है, जो कि आत्मिक सुख, सकारात्मक दृष्टिकोण, कर्मठता तथा उन्नति के लिए भी मार्गदर्शन कर सकती है।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान में हिन्दी दिवस माह

राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में 1 से 29 सितम्बर 2022 तक हिन्दी दिवस माह पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस माह के अवसर पर हस्ताक्षर दिवस, हिन्दी कार्यशाला, निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग), टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता (प्रशासनिक कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए), वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग) एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता (प्रोजैक्ट कर्मचारियों के लिए) का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन संस्थान की निदेशक प्रभारी डॉ. मंजु राही के निर्देशन में सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के सहयोग से किया गया।

हिन्दी माह की प्रथम गतिविधि हस्ताक्षर दिवस का आयोजन दिनांक 01 सितम्बर 2022 को किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान में सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपने सरकारी कामकाज में हस्ताक्षर अनिवार्य रुप से हिन्दी में करने का निर्देश दिया गया। तत्पश्चात् दिनांक 6 सितम्बर 2022 को पूर्वाह्न 10 से 11 बजे तक तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय "राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की व्यावहारिक समस्याएं" था। संबंधित कार्यशाला में व्याख्याता के रुप में राष्ट्रपति भवन में ओएसडी (राजभाषा), डॉ. राकेश बी. दुबे को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान की निदेशक प्रभारी डॉ. मंजु राही की

हिन्दी दिवस माह के चित्र

गरिमामयी उपस्थिति रहीं। डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा व्याख्याता का परिचय देने के पश्चात् उन्होंने व्याख्याता को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया। डॉ. दुबे ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आने वाली समस्याओं के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए उनके निराकरण पर जोर दिया।

तत्पश्चात् दिनांक 20 सितम्बर 2022 को पूर्वाह्न 11 बजे से संस्थान के प्रशासनिक कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों के लिए टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिता का संचालन संस्थान के लेखा अधिकारी श्री प्रदीप कुमार द्वारा किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिन्दी माह की अगली गतिविधि के अंतर्गत दिनांक 22 सितम्बर 2022 को पूर्वाह्न 11 बजे से अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय "हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे : भूतकाल से वर्तमान की यात्रा"। इस प्रतियोगिता का संचालन डॉ. जसप्रीत कौर, वैज्ञानिक-सी द्वारा किया गया और संबंधित प्रतियोगिता में लगभग 21 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

तत्पश्चात् दिनांक 23 सितम्बर 2022 को पूर्वाह्न में संस्थान के प्रोजैक्ट कर्मचारियों के लिए एक श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका संचालन डॉ. रामदास, वैज्ञानिक-डी द्वारा किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में लगभग 42 कर्मचारियों ने भाग लिया। इसी क्रम में दिनांक 26 सितम्बर 2022 को अपराह्न 3 बजे से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय "सोशल मीडिया युवाओं के लिए घातक/ वरदान" था। संबंधित प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में डॉ. नीलकंठ कुमार, सहायक प्रोफेसर, एनसीईआरटी दिल्ली एवं डॉ. कुमार पाल शर्मा, उपनिदेशक

(कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता में संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। इसके अलावा क्षेत्रीय इकाईयों के अधिकारियों ने भी (ऑनलाइन) वेब माध्यम से भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. रजनीकान्त दीक्षित, वैज्ञानिक-ई द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के अंत में निर्णायकगणों द्वारा कर्मचारियों के विचारों एवं उत्साह की सराहना की गई और निर्णायकगणों द्वारा भी संबंधित विषय पर अत्यन्त लाभकारी चर्चा की गई।

संस्थान द्वारा दिनांक 29 सितम्बर 2022 को हिन्दी माह की अंतिम गतिविधि पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हास्य कवि सम्मेलन में कवि के रुप में श्री महेन्द्र अजनवी जी एवं श्री दीपक गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने अपनी काव्यधारा से सभी उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्निग्ध कर दिया। इस समारोह का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। समारोह को आरंभ करते हुए संस्थान द्वारा कवि श्री महेन्द्र अजनवी, श्री दीपक गुप्ता एवं डॉ. पी.के. अतुल, वैज्ञानिक-एफ का प्लांटर से विधिवत स्वागत किया गया। स्वागत समारोह के पश्चात् आमंत्रित कवियों को श्री दिनेश सोनी, प्रशासन अधिकारी द्वारा शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् डॉ. प्रवीण कुमार अतुल, वैज्ञानिक-एफ ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान में आयोजित गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का उद्देश्य राजभाषा को उसका उचित दर्जा दिलाना है। इसके साथ ही उन्होंने आमंत्रित कवियों का परिचय भी दिया। इसी क्रम में सर्वप्रथम वर्ष 2021-22 के दौरान संस्थान में राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु पुरस्कारों एवं संस्थान की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों की घोषणा डॉ. के.सी. पाण्डेय, वैज्ञानिक-एफ

द्वारा की गई और संबंधित पुरस्कार डॉ. पी.के. अतुल, वैज्ञानिक-एफ के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए। संस्थान की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्री मोहन सिंह बिष्ट, श्री सुबोध कुमार त्यागी ने प्रथम, श्री वंशीधर, श्री प्रकाश चन्द्र जोशी और श्री अजय मित्रा ने द्वितीय तथा श्री राजेन्द्र सिंह, श्री रमाकान्त पाल, श्री शिवदर्शन सिंह रावत, श्री राजकपूर मौर्य एवं श्री नरेन्द्र सिंह ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इसके पश्चात् तकनीकी वर्ग की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों में श्री राम सिंह तोमर ने प्रथम और श्री राशिद परवेज ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

इसी क्रम में राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्री बृजमोहन शर्मा और श्री पवन कुमार मीणा ने प्रथम, श्री प्रताप कुमार मंडल, श्रीमती तारा मोनिका टिग्गा एवं श्री धीरज सिंह रावत ने द्वितीय, श्री प्रकाश नारायण, श्री सुरेन्द्र नाथ राय, श्रीमती कामिनी गढ़ोक, श्री अबरार अली तथा श्रीमती निधि गुप्ता ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। श्री दिनेश सोनी ने हिन्दी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने वाले अधिकारी का पुरस्कार प्राप्त किया।

संबंधित पुरस्कारों के बाद श्री दीपक गुप्ता द्वारा हास्य काव्य पाठ किया गया। उनकी रचनाओं ने श्रोताओं में नया उत्साह भरकर मंत्र मुग्ध कर दिया। काव्य पाठ के पश्चात् निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी-कर्मचारी वर्ग) के पुरस्कारों तथा वाद-विवाद (अधिकारी-कर्मचारी वर्ग) की घोषणा डॉ. रजनीकान्त दीक्षित द्वारा की गई एवं संबंधित पुरस्कार कवि श्री दीपक गुप्ता के कर-कमलों से प्रदान किए गए। निबंध प्रतियोगिता में श्री दिनेश सोनी, श्रीमती कमला नेगी ने प्रथम पुरस्कार, डॉ. अभिनव सिन्हा, श्रीमती सोनाली मेहरा ने द्वितीय पुरस्कार, श्री ए.पी. सेमवाल और श्री प्रदीप दत्ता ने तृतीय पुरस्कार तथा श्री राम सिंह तोमर व श्री शान्ति कुमार तिवारी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। इसके पश्चात् वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी-कर्मचारी वर्ग) के पुरस्कारों में

डॉ. पीयूष व डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी ने प्रथम, डॉ. मृदुल मोहन एवं श्री जितेन्द्र परिहार ने द्वितीय और डॉ. प्रशान्त मलिक व श्रीमती सोनाली मेहरा ने तृतीय पुरस्कार और श्री वंशीधर और श्री राकेश जोशी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

इन पुरस्कारों के पश्चात् आमंत्रित कवि श्री महेन्द्र अजनवी ने अपनी हास्य कविता से सभी श्रोताओं में नई ऊर्जा एवं स्फुर्ति का संचार किया। श्री अजनवी के काव्य-पाठ के पश्चात् श्रुतलेख प्रतियोगिता और टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा लेखा अधिकारी श्री प्रदीप कुमार द्वारा की गई और संबंधित पुरस्कार श्री महेन्द्र अजनवी के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए। श्रुतलेख प्रतियोगिता (संविदागत, प्रोजैक्ट कर्मचारियों में श्री दीपक धवन ने प्रथम, श्रीमती रुबिका चौहान ने द्वितीय, श्री देवेन्द्र कुमार ने तृतीय और श्रीमती रजनी और श्री सचिन राणा ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री दीपक कुमार, द्वितीय पुरस्कार श्री राजकपूर मौर्य, तृतीय पुरस्कार श्री राकेश जोशी तथा श्री पवन कुमार मीणा तथा श्री रमेश जंडवानी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा लागू प्रोत्साहन योजना में 22 कर्मचारियों ने भाग लिया था, किन्तु पुरस्कारों की संख्या मात्र 20 होने के कारण शेष दो कर्मचारियों श्री रजनीश कटारा तथा श्री रमेश जंडवानी को सान्तवना पुरस्कार के रुप में 500-500 रुपये दिए जाने की घोषणा की गई। अंतत: कार्यक्रम का विधिवत् रुप से समापन करने हेतु डॉ. रजनीकान्त दीक्षित, वैज्ञानिक-ई ने हिन्दी दिवस माह के दौरान आयोजित गतिविधियों का सफलता पूर्वक संचालन करने हेतु सभी संचालकों को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ ही समग्र कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान के निदेशक प्रभारी की सराहना करते हुए उन्हें हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

यही नहीं संस्थान में पधारे कविगणों का भी समारोह में पधारने के लिए विशेष रुप से आभार व्यक्त किया और इसके साथ ही उपस्थित श्रोताओं और विजेताओं को भी धन्यवाद दिया, जिनके सहयोग से इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

संस्थान की क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस

संस्थान मुख्यालय ही नहीं वरन् संस्थान की 5 क्षेत्रीय इकाईयों में भी निर्देशानुसार हिन्दी दिवस पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज राजभाषा में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। क्षेत्रीय इकाईयों में प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की झिझक को समाप्त करने के प्रयास की दिशा में कदम उठाया गया। इसी क्रम में रायपुर, रांची, बंगलुरु, गुवाहाटी एवं नडियाद क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय इकाई, रांची

राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय इकाई, रांची में 14 सितम्बर 2022 को अत्यंत हर्षोउल्लास के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय इकाई में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

किया गया। इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी, रांची द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा की, जिसमें सुश्री रीता कुमारी, प्रथम, श्री नरेन्द्र कुमार शुक्ल, द्वितीय, सुश्री प्रतिमा लेंका, तृतीय और श्री दिग्विजय साह तथा श्री बिकास चंद्र बिस्वास को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय इकाई, रायपुर

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रायपुर में 22 सितम्बर 2022 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संबंधित क्षेत्रीय इकाई द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा बढ़ चढ़ कर भाग लिया। मुख्य अतिथि के रुप में जवाहर नवोदय विद्यालय, रायपुर के स्नात्कोतर शिक्षक (हिन्दी) श्री सियाराम पाठक को आमंत्रित किया गया था। अतिथि महोदय द्वारा निबंध प्रतियोगिता की प्रतियों का मूल्यांकन किया गया और श्री रमेश कुमार शर्मा को प्रथम, श्री राजेश कुमार को द्वितीय, श्री उदवीर सिंह को तृतीय तथा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता एवं श्री दुर्गा माधवपाड़ी को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। अंत में अतिथि महोदय को धन्यवाद के साथ समारोह का समापन हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु में 16 सितम्बर 2022 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देवासिश चटर्जी, वैज्ञानिक-डी, क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (द.) बंगलुरु को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया था। क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु द्वारा इस अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा संबंधित प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को चार विषय दिए गए थे। प्रतियोगिता में श्री राजेन्द्र प्रसाद तिवारी को प्रथम, श्री सुजिन नाथ एन. को द्वितीय, श्रीमती वैशाली वरकडे को तृतीय तथा सुश्री स्वाती और सुश्री भारती पी. को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। हिन्दी दिवस का समापन प्रभारी अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं समस्त अधिकारियों और धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी में 20 सितम्बर 2022 को हिन्दी दिवस के अवसर पर निबंध प्रतियोगता का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में श्रीमती मैना बोरो ने प्रथम, श्रीमती अर्चना गुप्ता ने द्वितीय, श्री देबेन तालुकदार ने तृतीय और श्रीमती ज्योत्सना दास तथा श्री बाबुल रहांग ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

क्षेत्रीय इकाई, नडियाद

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, नडियाद में 30 सितम्बर 2022 को निबंध प्रतियोगिता के आयोजन के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। इस प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई, नडियाद के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हर्षोउल्लास के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालय श्री वी.एस. मालविया द्वारा किया गया और प्रभारी अधिकारी डॉ. राजेन्द्र कुमार बहारिया द्वारा कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिन्दी में कार्य करने का आग्रह किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन अपराह्न 3 बजे से आरंभ हुआ। निबंध प्रतियोगिता का विषय - "सोशल मीडिया की भूमिका" था। प्रतियोगिता का मूल्यांकन भाषा, शैली एवं विचारों के आधार पर संचालक श्री वी.एस. मालविया द्वारा किया गया और श्री आर.जी. पटेल को प्रथम, श्री हेग्मींग्स क्रिश्चियन को द्वितीय, श्री जय कुमार जोशी को तृतीय और सुश्री भव्या मोदी तथा श्री राजेश कुमार हरिजन को प्रोत्साहन पुरस्कार को लिए चुना गया।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान का वार्षिकोत्सव

किसी संस्थान प्रतिष्ठान एवं कार्यालय के लिए वार्षिक दिवस समारोह मनाना इस बात को इंगित करता है कि वह संस्थान प्रगति की राह पर अग्रसर है। इसी का साक्षात प्रमाण राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान द्वारा अपना 45वां वार्षिक दिवस समारोह दिनांक 1 नवम्बर 2022 का मनाया जाना है। संस्थान के लिए यह अत्यन्त गर्व की बात है कि वर्ष 1977 में बोए बीज ने आज एक विशाल वृक्ष का रुप धारण कर लिया है और इसकी शाखाएं देश के कोने-कोने में फैली हुई है। वर्ष 1977 में 22-शामनाथ मार्ग, नई दिल्ली स्थित कार्यालय में मात्र कुछ अधिकारियों/कर्मचारियों से आरंभ हुए मलेरिया अनुसंधान केन्द्र ने धीरे-धीरे अपनी आप को एक व्यापक रुप में स्थापित किया, जिसे आज आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, नई दिल्ली के नाम से जाना जाता है। आज भारत में ही नहीं अपितु विश्व में इसे प्रतिष्ठापित करने में यहां के वैज्ञानिकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मलेरिया नियंत्रण हेतु मौलिक व जन-उपयोगी अनुसंधानों द्वारा मलेरिया निदान एवं उपचार संबंधी उपायों एवं तरीकों की खोज करने में संस्थान का वैज्ञानिक समुदाय लगातार प्रयासरत है।

संस्थान के 45वें वार्षिक दिवस के उपलक्ष में दिनांक 1 नवम्बर 2022 को पूर्वाह्न 10 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान की निदेशक प्रभारी डॉ. मंजु राही द्वारा अतिथियों के स्वागत भाषण से हुआ। संस्थान के 45वें वार्षिक दिवस के उपलक्ष में प्रात:कालीन सत्र में पैनल चर्चा का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की दिशा में अनुसंधान"।

उल्लेखित विज्ञानीय चर्चा में डॉ. तनु जैन, निदेशक, एनसीवीबीडीसी, डॉ. शिवलाल, अध्यक्ष, सैक, आईसीएमआर, डॉ. बी.आर. दास, पूर्व सलाहकार, डीबीटी एवं प्रतिष्ठित मेडिकल वैज्ञानिक, आईसीएमआर, डॉ. रिंकु शर्मा, संयुक्त निदेशक, सीबीबीडीसी, डॉ. अश्विनी कुमार, निदेशक,

आईसीएमआर-वीसीआरसी, पुडुचेरी, डॉ. अमित शर्मा, पूर्व निदेशक, आईसीएमआर-एनआईएमआर, ग्रुप लीडर, स्ट्रक्चर पेरासिटोलॉजी, आईसीजीईबी, डॉ. रवि कुमार, वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक, एनसीवीबीडीसी, कर्नाटक (सेवा-निवृत्त) की प्रतिभागिता रही। इस परिचर्चा का कुशल संचालन डॉ. निकिता, वैज्ञानिक-ई, एनआईएमआर द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम निदेशक प्रभारी महोदया ने इस शुभ अवसर पर पधारे सभी अतिथिगणों एवं महानुभावों और उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और बताया कि मलेरिया संस्थान का मलेरिया एवं अन्य रोगवाहक जन्य रोगों की दिशा में किए गए प्रयासों का लंबा इतिहास है। पैनल चर्चा का आरंभ करते हुए डॉ. तनु जैन, निदेशक, एनसीवीबीडीसी ने अपने संबोधन में बताया कि हमारा लक्ष्य वर्ष 2023 तक देश से मलेरिया का पूर्ण रुप से उन्मूलन कर देना है। किन्तु उचित बचाव उपायों की कमी के कारण इसके पुन: हो जाने की संभावना होती है। अत: हमें अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण योजनाओं जैसे औषधियों एवं नैदानिक उपचार, दूर-दराज इलाकों में पहुंच, उपचार के प्रकार, औषध अनुपालन आदि पर कार्य करने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात् डॉ. रवि कुमार ने राष्ट्रीय मुक्तिपूर्ण योजना (दस्तावेज 2023-24) में राष्ट्र की भूमिका पर जोर दिया। इसमें कर्नाटक का उदाहरण देते हुए कीट विज्ञान का महत्व, रिमोट सेंसिग के माध्यम से डिजिटल मैपिंग जीआईएस, कीटनाशक प्रतिरोधकता हेतु ड्रोन आणविक चिन्हकों के महत्व के साथ ही तकनीशियनों के लिए नियमित प्रशिक्षण की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। चर्चा के अगले क्रम में डॉ. अश्विनी कुमार ने बताया कि प्रतिरोधकता एक बड़ी चुनौती है और नए उपकरणों या उपाय आने में अभी देर है।

इसके साथ ही रोगवाहक नियंत्रण की दिशा में मानवशक्ति की कमी भी एक बड़ी बाधा है। कीट विज्ञानियों की भारी कमी हैं। हमें मौजूदा उपकरणों का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से करना चाहिए। ऑनलाइन रुप से जुड़े डॉ. बी.एन. दास ने चर्चा में बताया कि मेरा इंडिया मलेरिया का ऐसा विशेष प्लेटफार्म हैं जो पूर्ण रुप से परिचालन अनुसंधान एवं फडिंग प्रोजैक्ट पर केन्द्रित है। उन्होंने बताया कि अनेक प्रोजैक्ट जैसे रोगवाहकों की पहचान एवं आणविक निदान में कृत्रिम बुद्धि, प्रवास द्वारा मलेरिया रोग में योगदान इत्यादि सुदृढ रुप से प्रमाणित करते हैं कि उन पर प्रोग्राम प्रचालन हेतु नीति निर्माताओं को आश्वस्त करने के लिए विचार किया जाए।

मेरा इंडिया एवं एनवीबीसीपी के मध्य सहयोग का होना बेहद आवश्यक है। डॉ. अमित शर्मा ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बताया कि पिछले 20 वर्षों में न सिर्फ भारत ने अपितु विश्व के अन्य देशों में हुए अनुसंधान कार्य की समीक्षा करनी चाहिए और इन्हें ध्यान में रखते हुए नए उपायों जैसे नैदानिक, टीककरण, नई औषध नैदानिक अद्यतन उपकरण निदान हेतु पीसीआर आधारित उपकरणों के प्रयोग की व्यवहार्यता पर जोर दिया। इनके अनेक लाभ हैं जैसे यह कम घनत्व वाले संक्रमणों को आसानी से पकड़ लेते हैं और परजीवी प्रजातियों का आसानी से पता लगाते हैं। डॉ. तनु जैन ने परस्पर सहयोग और समन्वय से काम करने पर जोर देते हुए मलेरिया उन्मूलन की राह में आईसीएमआर एवं एनआईएमआर की भूमिका पर प्रकाश डाला। चर्चा के अंतिम चरण में डॉ. सुचि त्यागी, वैज्ञानिक-सी ने सभी उच्च पदाधिकारियों को स्वागत स्वरुप स्मृति चिन्ह प्रदान किए। इसके साथ ही तकनीकी सत्र के समापन पर डॉ. सुचि त्यागी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए उपस्थित माननीय अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इसी क्रम में अपराह्न 2.30 बजे एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों/छात्रों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिसका संचालन संस्थान की डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। इस गतिविधि के अंतर्गत महत्वपूर्ण गतिविधि जिसमें संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों जिन्होंने संस्थान में सेवा के 25 वर्ष पूर्ण किए, को निदेशक प्रभारी द्वारा सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम के सफल आयोजन पर संस्थान की निदेशक प्रभारी द्वारा संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रतियोगिता में विजेताओं एवं गतिविधियों में शामिल प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

संस्थान की गतिविधियां

स्वच्छता संबंधी गतिविधियां

इस छ:माही के दौरान स्वच्छता गतिविधियों के अंतर्गत संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों के सहयोग से प्रतिमाह विविध श्रमदान गतिविधियों का आयोजन किया गया। संस्थान परिसर के गेट संख्या-2 एवं इसके आस-पास के क्षेत्र एवं पार्क में सूखे पत्तों के ढेर की सफाई की गई। प्लाजा हॉल में कबूतरों की बीट की सफाई के साथ ही कैंटीन हॉल के आस-पास के क्षेत्र में भी बिखरे पत्तों के ढेर को हटाया गया। इसके साथ ही कैंटीन के लॉन में बिखरे हुए कचरे की भी सफाई की गई। लॉन में पड़ी टूटी हुई मेजों एवं कुर्सियों को भी उपयुक्त स्थान पर व्यवस्थित कर के रखा गया और संस्थान के प्रवेश द्वार के पास लगे मकड़ी के जालों को हटाया गया। परिसर के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आस-पास की भी सफाई की गई।

संस्थान की गतिविधियां

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

भारत सरकार द्वारा केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में दिनांक 31 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2022 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाए जाने का आदेश दिया गया था, जिसका विषय "भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत" था। इस संबंध में निर्देशों का पालन करते हुए संस्थान में भी सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाए जाने के क्रम में प्लाजा हॉल में दिनांक 31 अक्टूबर 2022 को पूर्वाह्न 11 बजे सतर्कता अधिकारी डॉ. रजनीकान्त दीक्षित द्वारा संस्थान के सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

संस्थान की गतिविधियां

संविधान दिवस

राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में दिनांक 26 नवम्बर 2022 को संविधान दिवस मनाया गया, जिसका विषय "भारत-लोकतंत्र की जननी" था। इस अवसर पर नोडल अधिकारी डॉ. ज्योति दास, वैज्ञानिक-एफ की देख-रेख में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पूर्वाह्न 10.45 बजे "भारत के संविधान की प्रस्तावना" पढ़ी गई। इसके साथ ही एनआईएमआर मुख्यालय एवं इसकी क्षेत्रीय इकाईयों के समस्त स्टॉफ हेतु पोर्टल https://constitutionqui.nic.in पर "भारत-लोकतंत्र की जननी" विषय पर ऑनलाइन भी आयोजन किया गया।

जुलाई-दिसम्बर 2022 के दौरान संस्थान के सेवा-निवृत्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान को जीवन-पर्यन्त अपनी सेवाएं प्रदान करने के बाद पूरे सम्मान के साथ सेवा-निवृत्ति प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को संस्थान परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद देकर उऋण नहीं हो सकते वरन् अपनी मेहनत,निष्ठा से संस्थान को विकास एवं प्रगति की ओर अग्रसर करने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करने हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ रहने की शुभकामनाएं करते हैं। संस्थान से सेवा-निवृत्त होने वाले कर्मचारियों के नाम निम्न प्रकार हैं:-

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्ति की दिनांक
1	डॉ. ओम प्रकाश सिंह	वैज्ञानिक-जी	31.07.2022
2	श्री पवन कुमार	प्रधान तकनीकी अधिकारी	31.07.2022
3	श्री असीम कुमार दास	तकनीकी सहायक	31.07.2022
4	डॉ. अखिलेश चन्द्र पाण्डेय	तकनीकी अधिकारी	31.07.2022
5	श्री फूल सिंह	एफएलए	31.07.2022
6	श्री सतीश चन्द्र शुक्ला	वाहन चालक	31.07.2022
7	श्री एस.एफ. क्रिसचन	वाहन चालक	31.08.2022
8	श्री सुनील कुमार शर्मा	वाहन चालक	30.09.2022
9	श्रीमती सूर्या नायक	सफाई कर्मचारी	30.09.2022
10	श्री उदय प्रकाश	एफएलए	30.09.2022
11	श्री विरेन्द्र कुमार मिश्रा	वाहन चालक	30.09.2022 (वीआरएस)
12	श्री ए.एन. वर्मा	प्रयोगशाला तकनीशियन	31.10.2022
13	श्री सुरेश कुमार	वरिष्ठ वाहन चालक	31.10.2022
14	श्रीमती पिंकी सक्सेना	अनुभाग अधिकारी	30.11.2022
15	श्री रमेश चन्द्र बुधोड़ी	अनुभाग अधिकारी	30.11.2022
16	श्री दुर्गा एम. पाधि	स्वास्थ्य शिक्षक	31.12.2022
17	श्री जी.आर. पाधि	एफएलए	31.12.2022
18	श्री विजय ओम	प्रयोगशाला तकनीशियन	31.12.2022
19	श्री राजकुमार	अनुभाग अधिकारी	31.12.2022

जुलाई-दिसम्बर 2022 के दौरान संस्थान के नवनियुक्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के विकास सोपानों के दौरान कई अधिकारी/कर्मचारी सेवा-निवृत्त होते हुए इसकी बागडोर नव-नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों को सौंपते गए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों के आगमन पर संस्थान परिवार उनका हार्दिक स्वागत करता है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि संस्थान के निम्नलिखित वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी अपने बौद्धिक ज्ञान, प्रतिभा, मेहनत एवं निष्ठा से संस्थान को उन्नति की ओर अग्रसर करने में अपना उल्लेखनीय योगदान प्रदान करेंगे।

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	संस्थान में कार्य ग्रहण करने की दिनांक
1	डॉ. दीपाली अन्विकर	वैज्ञानिक-डी	19.07.2022
2	डॉ. नीलिमा मिश्रा	वैज्ञानिक-एफ	12.08.2022